ज्ञान का आनंद

एक बार नहीं, कई बार
मेरे मन में आया विचार
सत्संग में चलकर, अपना नाम लिखाऊँ
सत्गुरु के समक्ष, मैं भी गीत गाऊँ
कभी रखूँगा गीत, कभी करूँगा विचार
ताकि, अपना भी हो सके प्रचार
लोग मुझे जाने, देखकर पहचाने
महात्मा जी आ रहें हैं ।
यही भाव लेकर सत्संग में चला गया
अपना नाम दर्ज़ कराकर, सत्संग में बैठ गया
अभी मेरा नाम आयेगा,मैं भी गीत गायेगा (गाऊँगा)
जब मेरा गीत सुनेंगे, तब तो, बड़े ही , खुश होंगे
इसी तरह से, बड़ी बेसबरी से, करने लगा इंतज़ार,
तभी सेक्रेटरी महोदय का हुआ विचार
कि- जिन महात्मा का नाम नहीं दे पाया , क्षमा करेंगे ।
सेक्रेटरीजी का यह विचार सुनकर,
मुझे बहुत दुख हुआ और क्रोध आया,
स्टेज का विचार भी, नहीं सुन पाया
सत्संग खत्म हो गयी, संत सभी जाने लगे
इतने में, एक महात्माजी, कहने लगे
"आज का विचार, बहुत अच्छा था ।"
महात्माजी की यह बात सुनकर
जब मैं अपनी मूर्खता
महसूस किया और विचारा
तभी मेरी आत्मा ने मुझे धिक्कारा
"धनीराम! अपनी सोच बदल दे ।
अपने आप को समर्पित कर दे ।
मन का आपा मिटाकर, जो सत्संग में आता है ।
सत्गुरु के ज्ञान का वही, आनंद पाता है ।।

"धनीराम"
मुम्बई

सत्य, अहिंसा, मिलवर्तन के, आओ मिलकर दीप जलायें ।

मानवता ही धर्म है केवल, पढकर देखो वेद-पुराण
फिर क्यूँ आपस में है, लड़ता सोच ज़रा तू ऐ इंसान
करता है तू बम-विस्फोट, अरे...ज़रा तू कुछ तो सोच
समय का स्वामी धरा पे आया , अब तो ले लो इसकी ओट
धर्म है केवल प्यार सिखाता, तो प्यार-नम्रता ही अपनायें ।।

हिंदु-मुस्लिम-सिख-ईसाई, आपस में हैं भाई-भाई
यह बात सभी तो है कहते, फिर धर्म में क्यूँ होती है लड़ाई
पहले जाने समझे भाई, मानवता की है सिखलाई
धर्म जोड़ता ही है केवल, यही धर्म की है सच्चाई
सत्कार करें हम इक-दूजे का , ईद-दिवाली मिल के मनायें ।।

बड़ा सुहाना अवसर है यह,निराकार साकार हुआ है
हर इंसा से प्यार करें हम, सत्गुरु का फरमान हुआ है
सहनशीलता को अपनायें, निंदा-नफरत से बच जायें
ऊँच-नीच के भेद-भाव को, तोड़े सबको गले लगायें
एक-दूजे को प्यार से देखें, ऐसा इक संसार बनायें ।।

"धनीराम"
मुम्बई